This question paper contains 4 printed pages.

Your Roll No. .....

Sl. No. of Ques. Paper: **2347** **HC**

Unique Paper Code : **62051102**

Name of Paper : **M.I.L.; Hindi Bhasha Aur Sahitya; Hindi (A)**

Name of Course : **B.A. (Prog.) CBCS**

Semester : **I**

Duration : **3 hours**

Maximum Marks : **75**

(इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिये गये निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिये।)

सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. सप्रसंग व्याख्या कीजिए:

(क) करता था तौ क्यूँ रह्या, अब करि क्यूँ पछताइ।।
बोवै पेड़ बबूल का, अंब कहाँ तैं खाई।।
कबीर इस संसार को, समझाऊं कै बार।
पूँछ जु पकड़ै भेड़ की, उतर्‌या चाहै पार।।

अथवा

म्हारो गोकुल रो बजवासी।।
बजलीला लख जण सुख पावाँ, बजवणताँ सुखरासी।
णाच्याँ गावाँ ताल बजावाँ, पावाँ आणंद हाँसी।

P. T. O.

णन्द जसोदा पुत्र री, प्रगटयाँ प्रभु अविनासी।
पीताम्बर कट उर बैजणताँ, कर सोहाँ री बाँसी।
मीराँ रे प्रभु गिरधर नागर, दरसण दीज्यो दासी।

(ख) वे न इहाँ नागर, बढ़ी जिन आदर तो आब।
फूल्यौ अनफूल्यौ भयौ गँवई-गाँव, गुलाब।।
चल्यौ जाइ, ह्याँ को करै हाथिनु के व्यापार।
नहीं जानतु, इहिं पुर बसैं धोबी, ओड़, कुँभार।।

अथवा

हीन भएँ जलमीन अधीन कहा कछु मो अकुलनि समानै।
नीर सनेही को लाय कलंक निरास ह्वै कायर त्यागत प्रानै।
प्रीति की रीति सु क्यों समझै जड़, मीत के पानि परे कौं प्रमानै।
या मन की जु दसा घनआँनद जीव की जीवनि जान ही जानै।

(ग) अधिकार खोकर बैठ रहना, यह महा दुष्कर्म है;
न्यायार्थ अपने बंधु को भी दण्ड देना धर्म है।
इस तत्त्व पर ही कौरवों से पाण्डवों का रण हुआ,
जो भव्य भारतवर्ष के कल्पान्त का कारण हुआ।।

अथवा

हिमाद्रि तुंग शृंग से
प्रबुद्ध शुद्ध भारती—
स्वयं प्रभा समुज्ज्वला
स्वतंत्रता पुकारती—

अमर्त्य वीर पुत्र हो, दृढ़-प्रतिज्ञ सोच लो,
प्रशस्त पुण्य पंथ है— बढ़े चलो, बढ़े चलो ! $10\times3=30$

2. किसी **एक** कवि का साहित्यिक परिचय दीजिए:

(क) मीराँबाई

(ख) कबीरदास । 10

3. घनानन्द का प्रेम संबंधी दृष्टिकोण स्पष्ट कीजिए ।

अथवा

बिहारी की कविता के सौष्ठव पर प्रकाश डालिए । 10

4. 'जयद्रथ वध' कविता का प्रतिपाद्य लिखिए ।

अथवा

काव्य-कला की दृष्टि से कवि नागार्जुन की कविता का मूल्यांकन कीजिए । 10

5. किन्हीं **तीन** पर टिप्पणी लिखिए:

(क) आधुनिक भारतीय भाषाएँ

(ख) हिंदी भाषा का परिचय

(ग) आदिकाल की विशेषताएँ

(घ) निर्गुण भक्ति काव्य धारा की प्रवृत्तियाँ

(च) भारतेन्दुयुगीन कविता

(छ) कथाकार प्रेमचंद । 5×3=15